प्रकाशन की तिथि 01.02.2020

ओ३म्

एक प्रति मूल्य: र

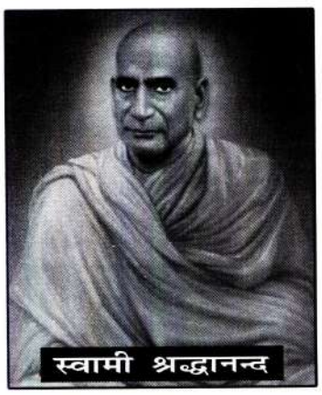

शुद्धि समाचार

सन् 1923 में स्वामी श्रद्धानन्द जी द्वारा स्थापित

भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा का मासिक मुखपत्र

माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः। अथर्ववेद 12.1.12
भूमि मेरी माता है और मैं उस मातृभूमि का पुत्र हूँ।

वर्ष 43 अंक 02

''शुद्धि ही हिन्दू जाति का जीवन है''

वार्षिक शुल्क :
आजीवन शुल्क :

फरवरी 2020 विक्रम सम्वत् 2076 माघ-फाल्गुन सनातन धर्मी नेता - पं. मदनमोहन मालवीय

दूरभाष : 011-23

परामर्शदाता: श्री हरबंस लाल कोहली श्री रणवीर सिंह श्री सुभाष चन्द्र दुआ श्री सुरेन्द्र गुप्त प्रबन्धक: श्री नरेन्द्र मो

हमें बोध कब होगा?

- डॉ. महेश विद्यालंकार

शिवरात्रि सत्यज्ञान आत्मबोध परमात्मज्ञान एवं जड़-चेतन के सत्यबोध का प्रेरक पर्व है। यह तिथि प्रतिवर्ष जागने, संभलने, श्रेष्ठ विचारों, व्रतों, संकल्पों और जीवनोद्देश्य को बताने एवं दुहराने के लिए आती है। आर्यसमाज के इतिहास में और ऋषि भक्तों के लिए इसका विशेष महत्व है। मूलशंकर और आर्यों के लिए यह शिवरात्रि बोधरात्रि बन गई। टंकारा मन्दिर की वह ऐतिहासिक प्रेरक, नवजागरण की रात थी। जिसने मूलशंकर को ऋषि दयानन्द बना दिया। शिवरात्रि को स्वयं जागे और जीवन भर लोगों को जगाते रहे तथा जीवन-जगत का सत्यबोध कराते रहे। मूलशंकर ने प्रेरक भजन की पंक्तियों को व्यावहारिक रूप दिया-

जो जागत है सो पावत है जो सोवत है सो खोवत है-शिवरात्रि की रात को मूलशंकर के हृदय में दिव्य, ज्ञान, ज्योति का प्रकाश हुआ। मुझे यहाँ जिस परमेश्वर की पूजा के लिए लाया गया है, वह यह नहीं है। जो शिव के गुण और विशेषताएं बताई गई थी। वे इनमें नहीं है। मूलशंकर ने सत्य तत्वज्ञान से एक झटके में मिथ्या-अज्ञान व भ्रान्ति को तोड़ दिया। उनके जीवन में यह शिवरात्रि जीवन परिवर्तन का कारण बनी। वे एक रात जागे, फिर कभी जीवन में नहीं सोये। आर्यसमाज के लिए यह शिवरात्रि प्रभु का वरदान सिद्ध हुई। यदि मूलशंकर के जीवन में शिवरात्रि न आती, तो मूलशंकर दयानन्द न बनते। यदि दयानन्द न होते तो आर्यसमाज न होता। यदि आर्यसमाज ने होता तो देश, धर्म, संस्कृति, वेद, यज्ञ, नारी और हमारी सबकी क्या दश व दिशा होती। इतिहास साक्षी है-छोटी-छोटी बातों, घटनाओं ठोकरों और प्रेरक उपदेशों से जीवन का रंग-ढंग ही बदल जाता है। भोगी, विलासी, दुर्व्यसनी जीवन तपस्वी त्यागी और परोपकारी बन जाते हैं। पतित जीवन से पवित्र जीवन बन गए। कोई नास्तिक से आस्तिक हो गया। एक वाक्य ने कीचड़ में फंसे हीरे को अपनी पहचान करा दी।

पर्व, जयन्तियां, उत्सव, सम्मेलन और धार्मिक कार्यक्रम हमें जागने संभलने, सुधरने, ऊपर उठने तथा सन्मार्ग पर चलने की प्रेरणा व सन्देश देते हैं। हर साल शिवरात्रि हमें जगाने आती है। हमारे सबके जीवन में कितनी शिवरात्रियां आई और बाहर की धूमधाम तड़क-भड़क व लोकाचार में निकल गई। कहीं प्रेरणा, चेतना, भावशुद्धि जीवन परिवर्तन आदि नजर नहीं आता। जो सच्चे शिवरूपी परमात्मा से मेल व बोध करा दे, वह तो सच्ची शिवरात्रि है, बाकी सोने की व संसारी रातें है। आज हम इतने भौतिकवादी एवं भोगवादी हो रहे हैं-कहीं रचनात्मक, सुधारात्मक, निर्माणात्मक परिवर्तन नहीं आता है। कहीं बुराई, पाप, अधर्म दुर्गण, दुर्व्यसन आदि से छूटने की ललक-बैचेनी तथा वेदना नहीं मिलती। कहीं कोई ऐसा व्यक्ति नहीं मिलता जो संकल्प, व्रत एवं भावना से कहता हो-मैंने अमुक कथा, प्रवचन, यज्ञ पर्व आदि से प्रेरणा लेकर, झूठ बोलना छोड़ दिया। सुबह शाम परमात्मा का स्मरण व धन्यवाद करना आरम्भ कर दिया है। मैंने व्रत लिया है-सपरिवार समाज मन्दिर में यज्ञ, भजन प्रवचन में जाया करूंगा। ऋषि मिशन के लिए त्यागभाव से सेवक बनकर कार्य करूंगा। धार्मिक सभा, संगठनों, संख्याओं और समाज मन्दिरों में पदों की दौड़ में नहीं दौडूंगा। आर्यत्वपूर्ण जीवन व्यतीत करूंगा। स्वाध्याय, सत्संग, प्रभुभक्ति सेवा आदि में रूचि व प्रवृत्ति को विकसित करूंगा। जो जीवन व समय बचा है उसे सार्थक एवं उद्देश्य पूर्ण ढंग से जीऊंगा। वर्तमान आर्यसमाज की शक्ति, समय, सोच, धन, भागदौड़ आदि व्यर्थ के विवादों, संघर्ष, उलझनों, झगड़ों व गुटबाजी में जा रहे है। आर्य समाज की आन्तरिक स्थिति प्रेरक सन्तोषजन्क, प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय नहीं बन पा रही है। सर्वत्र मूल में भूल हो रही है। जो आर्यसमाज में होना चाहिए वह हो नहीं रहा है, जो नहीं होना चाहिए वह हो रहा है। बोधोत्सव हमें कह रहा है-उठो जागो। अपने को संभालों। अपने कर्त्तव्य व लक्ष्य को समझो। यह अमूल्य जीवन बड़ी तेजी से बातों-बात जा रहा है। वेद पुकार कर कह रहा है-

''यो जग्गार तम् ऋंच का

जो जागता है उसे ही सत्यज्ञान क है। जिसे आत्मज्ञान हो गया, वही जीव प्राप्त कर पाता है। अधिकांश लोग अन है, जीते है ओर अनजाने में ही संसार हैं। यह शिवरात्रि आत्मबोध का भी पव हूं? कहां से आया हूँ? किसलिए आय कर्त्तव्य, धम्र एवं लक्ष्य क्या है? कहां थे? कहां जा रहे हैं? क्या खोया? अनेक ज्वलन्त प्रश्न, हमसे उत्तर मांग संसार, परिवार, परिचितों आदि के लि किया? जो हमारे साथ जायेगा, वह कि नहीं तो उपनिषद् कहती है-महती जीवन की सबसे बड़ी हानि हुई। स शक्ति और जीवन के रहते कुछ कर लो जीवन को संभाल सको, तो संभ दुनिया के भोग पदार्थों चीजों साध आदि के बारे में बहुत कुछ जान आत्मा-परमात्मा के बारे में कुछ भी म हमारी अन्दर की दुनिया सोई और र जलसे-जलूसों लंगरों, सम्मेलनों आदि रही है। किन्तु हमारी सोच, स्वभ व्यवहार तथा जीवन वहीं का वहीं खड बड़ा हिस्सा निकल गया, फिर भी विवेक वैराग्य आदि के भाव जीवन म रहे है? संसार और विषय भोगों के प की तरह दौड़े जा रहे हैं। इच्छाओं असन्तोष तथा अशान्ति की बैचेनी ब है। हमें कब बोध होगा? हम कब संभलेगें? हम अपना बोध दिवस क हमारे जीवन में सच्ची शिवरात्रि क मूलशंकर के जीवन में बोध दिवस अ दयानन्द बन गए। ऋषि से प्रेरणा व हम सबको अपना बोधोत्सव बनाने क जब हमारे जीवन जगत् में बोधोत्स

(शेष पृ

शुद्धि समाचार में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशन का उनसे सहमत होना आवश्य

वेदों के प्रति अगाध श्रद्धा रखने वाले दो ऋ
सतयुग में मनु और कलियुग में दयानन्द

-डॉ. भवानी लाल भारतीय

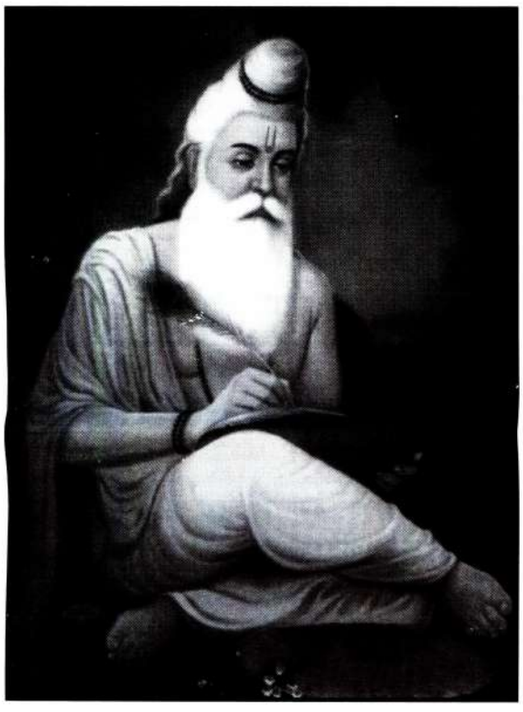

यों तो ईश्वर प्रदत्त वेदों के प्रति अगाध निष्ठा और श्रद्धा आदिकाल के ऋषियों से लेकर स्वामी विवेकानन्द पर्यन्त धर्माचार्यों, दाशनिकों तथा ऋषियों ने दिखाई है, उनकी सर्वोपरि प्रामाणिकता को भी स्वीकार किया है तथापि वेद के महत्त्व तथा मानवी जीवन में उनके मार्गदर्शन को जितनी निष्ठा और प्रामाणिकता के साथ सतयुग में महर्षि मनु तथा कलियुग में ऋषि दयानन्द ने दर्शाई है, वह बेमिसाल है, अनन्य है तथा अतुलनीय है। श्रुति के पश्चात् प्रामाणिक धर्मशास्त्रों में सर्वोपरि नाम मनु प्रणीत मनुस्मृति का है। सभी आचार्यों का मत है कि स्मृति ग्रंथों में मनु रचित स्मृति अथवा 'मानव धर्म शास्त्र' का सर्वोच्च स्थान है। मनु के टीकाकार कुल्लुक के अनुसार मनु के विपरीत अन्यों के कथन का कोई महत्त्व नहीं है।

मनुस्मृति में यथा प्रसंग वेदों की प्रामाणिकता तथा उनके सर्वोपरि महत्व को जिस उदात्त शैली में व्यक्त किया गया है वैसा अन्यत्र कहीं नहीं मिलता। मनु की स्पष्ट घोषणा है-वेदोऽखिलो धर्म मूलम्।। (1/63) सारे धर्मों अर्थात् कर्त्तव्य कर्मों का विधिविधान वेद है। उनके पश्चात् ही स्मृति ग्रंथों, सत्पुरुषों के आचरण तथा अपनी आत्मा की सन्तुष्टि को प्रमाण माना जा सकता है। इसलिए अगले श्लोक में मनु आदेश देते हैं-अतः विद्वान् को चाहिए-**श्रुति प्रामाण्यतो विद्वान् स्वधर्मे निविशेत वै।।** (1/64) इन सभी तथ्यों पर विचार कर विद्वान पुरुष को चाहिए कि वह श्रुति प्रमाण को प्रधानता देकर स्वधर्म का आचरण करे। मनु की सम्मति में श्रुतियों और तद्नुकूल स्मृति में प्रोक्त धर्म के आचरण से मनुष्य इस जन्म में कीर्ति तथा परलोक में सर्वोत्तम सुख प्राप्त करता है-

श्रुति स्मृत्युदितं धर्ममनुविष्ठन् हि मानवः।
इह कीर्तिमवाप्नोति प्रेत्य चातुत्तम। सुखम्।।
1/65

इसके पश्चात् मनु यह स्पष्ट करते हैं कि श्रुति से वेदों का अभिप्राय लेना चाहिए और स्मृति से धर्मशास्त्रों का आशय है-श्रुतिस्तु वेदो विज्ञेयो धर्मशास्त्रं तु वै स्मृतिः। (1/66) मनु चेतावनी देते हैं कि जो व्यक्ति व्यर्थ के तर्कशास्त्र का आश्रय लेकर वेदों की अवमानना करता है, उसे साधु लोग (सत्पुरुष) अपने समाज से बाहर कर दें क्योंकि वेद का निन्दक नास्तिक है।

नास्तिको वेदनिन्दकः।। (1/67)

प्रथम अध्याय के 68वें श्लोक में जहां धर्म के चार लक्षण बताये गये हैं, वहां वेदों को इनकी प्रामाणिकता में प्रथम स्थान दिया गया है-

वेदः स्मृतिः सदाचारः स्वस्य च प्रियमात्मनः।
एतच्चतुर्विधं प्राहुः साक्षाद्धर्मस्य लक्षणम्।।

यही चार धर्म के साक्षात् लक्षण हैं। इनका क्रम इस प्रकार है- (क) वेद (2) स्मृति (3) सदाचार (4) स्वात्मा के ज्ञान के अविरूद्ध।

अगले ही श्लोक में धर्म जिज्ञासुओं के लिए श्रुति (वेद) को परम प्रमाण माना गया है-

धर्म जिज्ञासमानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः (1/69)

इस प्रकार महर्षि मनु ने शास्त्रसमुदाय में वेदों की सर्वोच्चता तथा सर्वाधिक प्रमाणत्व की ही घोषणा नहीं की, यह भी बताया कि वेद समस्त ज्ञान विज्ञान के आदि स्त्रोत हैं। समस्त भौतिक और आध्यात्मिक रहस्यों का मूल वेदों में तलाशा जा सकता है। उनका मत था-

चातुर्वर्ण्य त्रयो लोकाश्चत्वारकामा पृथक्।
भूतं भव्यं भविष्यं च सर्व वेदात् प्रसिद्धयति।।

चातुर्वर्ण्य की सामाजिक व्यवस्था, तीनों लोकों में घटने वाले क्रिया-कलाप तथा मानव जीवन का चार आश्रमों में विभाजन, जो हो चुका है, हो रहा है और भविष्य में होने वाला है, यह सब वेदों से ही ज्ञात होता है। उन्होंने विभिन्न शासन व्यवस्थाओं और दण्ड विधानों का मूल भी वेद को ही ठहराया-

सेनापत्यं च राज्यं च दण्डनेतृत्वमेव च।
सर्वलोकाधिपत्यं च वेदशास्त्रविदर्हति।।
12/100

सेनापति का युद्ध कौशल, राजा की शासन एवं दण्ड व्यवस्था, समाज का नेतृत्व, यहां तक कि सर्व लोकों के अधिपति बनने की व्यवस्था वेदशास्त्रों के ज्ञाता पुरुष के द्वारा ही होती है। यही कारण है कि उन्होंने वेदों की उपयोगिता समाज के सभी लोगों के लिए स्वीकार की। चाहे देवकोटि के मनुष्य हों या हमारे पालक पिता तुल्य पितृगण अथवा सामान्य मानव, वेद सबको मार्ग दिखलाने वाले सनातन चक्षु हैं। इनकी सर्वोच्चता तथा शास्त्रों में सर्वोपरि, प्रामाणिकता स्वतः सिद्ध है।

मनु के वेदों के प्रति प्रशसि
की संक्षिप्त चर्चा करने के पश्च
उनके बाद में कलियुग में एकमे
भी वे आचार्य थे जिन्होंने मनु के
हुए वेदों की सर्वोपरि प्रामाणिक
स्थिति को स्वीकार किया। उनक
कि वेद विषयक उनका यह मत
आविष्कृत सिद्धान्त नहीं है किन्तु
के पूर्व के तथा उसके पश्चात्वर्त
दार्शनिकों तथा शास्त्र विवेचक
सर्वोपरि मान्यता को स्वीकार
दयानन्द के वेद विषयक विचार य
ग्रंथों में यत्र तत्र मिलते हैं, विशेष
स्वरचित ऋग्वेदादिभाष्यभूमिक
सत्यार्थप्रकाश के सप्तम समुल्ला
की विशद् चर्चा की है। वेदों
प्रतिपादन करते हुए उन्होंने पात
सांख्यदर्शन (कपलि कृत) तथा
वेदान्त दर्शन को उद्धत किया है।

यों तो महाभारत के परवर्ती
मध्व, निम्बार्क, वल्लभ, रामान
दार्शनिकों, सम्प्रदाय प्रवर्तकों तथा
के प्रति निष्ठा को यत्र-तत्र प्रकट
देखने की बात यह है कि वे
व्यावहारिक धरातल पर नहीं ला प
उनकी श्रद्धा मात्र मौखिक या औ
कारण? कि उनका वेद अध्ययन ब
या यों कहें कि उन्होंने वेदों क
किया ही नहीं था।

वेदों का सर्वविद्यामयत्व प्रति
ऋषि दयानन्द की मान्यता है कि इ

(शे

सम्पादकीय

आधुनिक काल खण्ड में स्वामी दयानन्द आविर्भाव संसार के इतिहास में महत्वपूर्ण अ

– आचार्य गवेन्द्र शास्त्री, मो. 9810884124

वैदिक धर्म के अनुयायिओं और आर्य समाज के सन्दर्भ में मास फरवरी की 18 और 21 तारीखें अपना विशेष महत्व रखती है। क्योंकि इन्हीं अवसरों पर इस वर्ष महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्मदिन तथा बोध दिवस शिवरात्रि समस्त आर्य सामाजिक जगत् में धूम-धाम के साथ मनायी जा रही है। आधुनिक काल खण्ड में स्वामी दयानन्द का आविर्भाव संसार के इतिहास में एक महत्वपूर्ण अध्याय है, जिसका समूचे विश्व पर अद्भुत प्रभाव पड़ा है। सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक क्षेत्रों पर इनके उपदेशों का विशेष प्रभाव पड़ा है। आज उनके द्वारा किये गये मानवता के प्रति लोगों का अनुकूल या प्रतिकूल जो भी मन्तव्य हो किन्तु यह एक सार्वजनिक सत्य है कि समूचे विश्व का कोई भी व्यक्ति उनकी उपेक्षा करने का दु:साहस नहीं कर सकता। अपनी सम्पूर्ण दैवी शक्तियों के साथ संसार के हित के लिए सर्वथा समर्पित स्वामी जी महान क्रान्तिकारी प्रवृत्ति के व्यक्तित्व थे। प्राचीन वैदिक संस्कृति के अनुसार सामाजिक विसंगतियों का निवारण करके पुन: वैदिक धर्म की प्रतिष्ठा करना उनके जीवन का मुख्य उद्देश्य था। वह परम आस्तिक, निर्भीकता के सथ सत्य का उपदेश करने वाले, स्वराज्य के प्रबल समर्थक, सामाजिक, समरसता-समानता के पक्षधर, कोमल हृदय और दयालु प्रकृति के महान आत्मा थे। विश्व के कल्याण के लिए उन्होंने आर्य समाज जैसे सुधारवादी संगठन की स्थापना की और संसार का हित संसाधन उसका मुख्य उद्देश्य बताया। संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। यह नियम बनाकर उन्होंने अपने समस्त अनुयायिओं तथा श्रेष्ठजनों को आर्यसमाज के साथ मिलकर संसार की उन्नति के लिए कार्य करने की प्रेरणा प्रदान की। उनके उपदेशों से पाखण्ड खण्ड-खण्ड हो गये। दुष्ट दुराचारियों की कूट-कापट्य पूर्ण किले की प्राचीरे ढह गई। उनके वेद भाष्य और वेदानुमोदित ग्रन्थों के प्रचार-प्रसार से देश-जाति में उत्साह की उमंग की लहर व्याप्त हो गई। उनकी काल जयी कृति 'सत्यार्थ-प्रकाश ने परवर्ती वंश परम्परा को सद् विचारों क कवच-कुण्डल प्रदान किया जिसके प्र व धर्म के सेवी जनों ने जनता का मार्ग कविवर प्रकाश जी सत्यार्थ प्रकाश के जी के प्रभाव को रेखांकित करते हुए लि

जैसे-मृग झुण्ड देख हरि को भ जैसे अन्धकार रविरश्मि देख भाग ज शुभकर्म से न पाप कर्म शेष रह जात का संग फल उत्तम दिखाता है। पारस लोहा भी सुवर्ण बन जाता है। स्वाति मोती बन दिखाता है वैसे स्वामी सदुपदेश, मानव मनों से भ्रम जाल को

स्वामी जी के बोध दिवस और ज आर्यजन आत्मा चिन्तन करके उनके क अधिक गतिमान करते हुए उनके विश्वमार्यम'' के संकल्प को पूर्णता तभी इन पर्वों की सार्थकता है।

शिवरात्रिः बोधरात्रि

बोधरात्रि: अथर्ववेदीय उपर्युक्त मन्त्र में निबोध शब्द बोध या जागरण का सन्देश देता है। फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को टंकारा के एक शिवालय में चौदह वर्ष के बालक मूलशंकर ने सच्चा बोध प्राप्त किया था। तब से यह विशिष्ट रात्रि बोधरात्रि बन गई। मूलशंकर के पिता सामवेद ब्राह्मण थे तथापि बालक मूलशंकर को उस छोटी सी अवस्था में उन्होंने सम्पूर्ण यजुर्वेद कण्ठस्थ कराया था। यह बोध पर्व व्यक्ति, जाति समाज, राष्ट्र विश्व सबको जगाता है।

शिवरात्रि-अथर्ववेद में शिव शब्द रात्रि का विशेषण बनकर आया है शिवरात्रि शब्द लौकिक व्यवहार में इसका अर्थ शिव की रात्रि है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम समुल्लास में परमेश्वर के सौ प्रसिद्ध नामो में शंकर शिव दोनों का परिगणन किया है। दोनों का अर्थ ''य: कल्याणं सुखं करोति स शंकर'' जो कल्याण सुख का करनंहार है उस ईश्वर का नाम शंकर है। जिस रात्रि की एकान्त, शान्त गोद में बैठकर साधक स्वयं शिव शम्भु या शंकर बनने की साधना किया करते है वह कल्याण कारिणी रात्रि ही शिवरात्रि है।

शिव को अतिथि के रूप में भी माना गया है। सद्गृहस्थ के लिए वह धन्य शिवरात्रि है जिस रात्रि उसके घर कोई विद्वान अतिथि निवास करता है। उसे व्रती रहकर अतिथिरूप शिव की पूजा सत्कार करने का अवसर मिलता है ऐसे शिवरात्रि की पूजा होती है। शिवरात्रि का यही वैदिक सन्देश है कि हमारी रात्रियाँ शिव और शुभ बने क्योंकि शिवरात्रि ही दिव्य जीवन का प्रतीक है। जिस प्रकार स्वामी दयानन्द का जीवन एक दिव्य जीवन बना, उसी प्रकार हमें भी अपने जीवन को दिव्य बनाने की ओर प्रेरित करना चाहिए।

आर्य समाज सूर्य निकेतन विकास मार्ग दिल्ली में **माता सुशीला, हरिदेव आर्य** की स्मृति में भव्य वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया। आचार्य गवेन्द्र शास्त्री के प्रेरक प्रवचन हुए। इस अवसर पर श्री अनिल आर्य जी एवं श्री वीरपाल विद्यालंकार गायत्री मीना जी ने अपने विचार रखे। **-यशोवीर आर्य**

छत्रपति शिवाजी के के प्रेरणादायक प्र

शिवाजी के समक्ष एक बार उनके गाँव के मुखिया को पकड़कर ले आये, घनी मूंछों बाला बड़ा ही रसूखदार व्यक्ति उस पर एक विधवा की इज्जत लूटने का हो चुका था। उस समय शिवाजी मात्र 1 पर वह बड़े ही बहादुर, निडर और न्या विशेषकर महिलाओं के प्रति उनके म सम्मान था।

उन्होंने तत्काल अपना निर्णय सुना दोनों हाथ, और पैर काट दो, ऐसे जघन्य लिए इससे कम कोई सजा नहीं हो सकती

शिवाजी जीवन पर्यन्त साहसिक क और गरीब, बेसहारा लोगों को हमेशा प्रेम देते रहे।

प्रसंग 2-शिवाजी के साहस का एक प्रसिद्ध है। तब पुणे के करीब नचनी भयानक चीते का आतंक छाया हुआ था। ही कहीं से हमला करता था और जंगल जाता था। डरे हुए गाँव वाले अपनी स शिवाजी के पास पहुँचे।

हमें उस भयानक चीते से बचाइए। कितने बच्चों को मार चुका है, ज्यादातर क करता है जब हम सब सो रहे होते हैं।

शिवाजी ने धैर्यपूर्वक ग्रामीणों को लोग चिन्ता मत करो। मैं यहाँ आपकी म लिए ही हूँ।'

शिवाजी अपने सिपाहियों यश ज सैनिकों के साथ जंगल में चीते को म निकल पड़े, बहुत ढूँढ़ने के बाद जैसे सामने आया, सैनिक डर कर पीछे ह शिवाजी और यश जी बिना डरे उस पर पलक झपकते ही उसे मार गिराया। सभ खुश हो गये और 'जय शिवाजी' के नारे ल

बच्चों का भविष्य एवं उनकी समस्याएँ

-मृदुला अग्रवाल, कोलकाता

बच्चों का भविष्य तीन तरह की समस्याओं में उलझ कर रह गया है:-

1. दूरदर्शन, फेसबुक, इण्टरनेट, चलभाष इत्यादि। 2. बाल्य श्रम, 3. बाल यौन शोषण।

बचपन मानव का निर्माण काल होता है। एक बालक सफल मनुष्य तभी बन सकता है, जब उसकी नींव सुदृढ़ हो। महर्षि दयानन्द जी ने ''सत्यार्थ प्रकाश'' के द्वितीय समुल्लास में लिखा है कि बालकों का सही निर्माण माँ के गर्भ से ही आरम्भ हो जाता है। बच्चों को उच्च संस्कार देने के लिए तथा उनके शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक विकास के लिए, माता-पिता को अपने हृदय की इच्छाओं पर अंकुश रखकर गर्भ के समय से ही मर्यादा का पालन करना चाहिए। जैसे, महाभारत में अभिमन्यु को चक्रव्यूह भेदन की शिक्षा माता के गर्भ में ही प्राप्त हुई थी।

''मही द्यौः पृथिवी च नऽइमं मिमिक्षताम्।
पिपृतां नो भरीमभिः॥''

- यजुर्वेद, अध्याय-13, मन्त्र-32

भावार्थ-हे माता-पिता। जैसे बसन्त ऋतु में पृथिवी और सूर्य सब संसार का धारण, प्रकाश और पालन करते हैं, वैसे ही तुम दोनों अपनी सन्तानों को अन्न (शुद्ध आहार), विद्या-दान और उत्तम शिक्षा देकर पूर्ण विद्वान् पुरुषार्थी करो। आजकल हमारे देश एवं समाज की अवस्था शनैःशनैः पतन की ओर अग्रसर हो रही है। रात-दिन बलात्कार हो रहे हैं। चारों तरफ भ्रष्टाचार बढ़ रहा है। धन और विलासिता में लोग डूबे जा रहे हैं। भारतीय संस्कृति को भूलकर पाश्चात्य संस्कृति एवं सभ्यता की ओर झुकाव सबसे बड़ी बाधा बन गया है। बच्चों का भविष्य नष्ट होता जा रहा है। ''दूरदर्शन'' पर युवतियों का आधुनिकता के चक्कर में अपने नश्वर शरीर की नुमाइश एवं कामुकता की हद को पार कर जाना भारतीय वैदिक संस्कृति पर कलंक जैसा है। समाचार पत्रों में, पत्रिकाओं में अश्लील व नंगी तस्वीरें, सबके घरों में हर उम्र के बच्चे देखते हैं, उन बच्चों के भावी सुचरित्र नागरिक बनने की संभावना को तिलांजलि देना है।

आधुनिक वैज्ञानिक यन्त्रों (फेसबुक, इण्टरनेट, चलभाष इत्यादि) से बालकों को एक तरफ उन्नति करने का अवसर मिला है तो दूसरी तरफ उससे नैतिक मूल्यों का पतन हुआ है। बालक के जीवन का सबसे अहम् स्थान स्कूल है। वहाँ का वातावरण सीधा उनके मन पर प्रभाव डालता है। उन्हीं स्कूलों में ''इण्टरनेट'' को अनिवार्य घोषित किया जा चुका है। इण्टरनेट पर पढ़ाई के अलावा भी तो नाना प्रकार के अनुचित मार्ग पर ले जाने वाले आकर्षण है। इन सबकी वजह से बालकों का जीवन तो अनैतिकता के गर्त में जा गिरा है। ऐसी परिस्थिति में माता-पिता आचार्य का उत्तदायित्व होता है कि बच्चों को नैतिक मूल्यों की शिक्षा दें। अच्छे संस्कार देते हुए उनको सदाचार से युक्त, सुयोग्य एवं लायक बनावें। ''माता निर्माताः भवतिः'' माता बच्चे की प्रथम गुरु है। माता को उन्हें कुकर्मो से बचाना होगा, किसी भी अंग से कुचेष्ठा न करने पावे ऐसा प्रयास करना होगा। उन्हें सत्यभाषण की आदत डालें, मादक द्रव्यों से दूर रखें। ऋग्वेद, मण्डल-7, सूक्त-2, मन्त्र-11 का भावार्थः-

''हे विद्वान्! जैसे सूर्य का प्रकाश दिव्य गुणों के साथ नीचे भी स्थित हम सभी को प्राप्त होता है और सत्य विद्या से युक्त उत्तम संतान वाली माता सुखपूर्वक स्थित होती है, वैसे ही विद्वान् हम सभी को, विशेषकर बालकों को, आप प्राप्त होकर अच्छी शिक्षा से सुखी कीजिए।''

स्वस्थ सामाजिक वातावरण एक बालक के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। परन्तु आजकल का आधुनिक समाज उसी बालक को ''बाल्य श्रमिक'' बनाकर स्वयं को गर्वित महसूस कर रहा है। ''बाल्य-श्रम'' पूरे विश्व की समस्या है। बाल्य-श्रम का औद्योगिक क्रांति में भी महत्त्वपूर्ण स्थान रहा है। बच्चों को बाल्य-श्रमिक बनाने के दो मुख्य कारण हैं- (1) गरीबी और (2) शिक्षा का अभाव। इन दोनों कारणों की वजह से, मजबूरी में, आज लाखों-करोड़ों की संख्या में इन मासूम एवं सरल बच्चों से हानिकारक रासायनिक पदार्थो के मध्य कल-कारखानों में, घरों में, चाय दुकानों में, ढाबों में, तरह-तरह के अत्याचारों को सहन करते हुए काम करवाया जा रहा है। बच्चे पूरे विश्व का भविष्य हैं। उन्हें कितनी जिम्मेवारियाँ सम्भालनी हैं-परिवार की, समाज की, राष्ट्र की एवं विश्व की भी। अगर बचपन में ही बाल्य-श्रमिक बन जायेंगे तो कैसे अच्छे तथा प्रतिष्ठावान नागरिक बन पायेंगे। भारत में C.R.Y. (Child Rights and You) के स्वयं सेवी इस समस्या का समाधान निकालने की चेष्टा तो कर रहे हैं। परन्तु सरकार का भी उत्तरदायित्व है कि गरीबी के कारण बच्चों की शिक्षा में अभाव न आवे।

अथर्ववेद, काण्ड-2, सूक्त-2-6, मन्त्र-3, 4, 5 के अनुसार माता-पिता प्रयत्न करें कि सन्तान उत्तम गृहस्थ बने, जितेन्द्रिय होकर अपने दोषों और दूसरे शत्रुओं का नाश करें। अन्नवान्, बलवान एवं धनवान् बनें। विद्वान् लोग उचित शिक्षा से उनकी रक्षा करें। प्रकृति से उपकार ग्रहण करके संसार में प्रवेश करें एवं आनन्द भोगें।

''बाल-यौन-शोषण'' बच्चों के लिए एक बहुत ही जटिल समस्या है। ज्यादातर घरवाले ही यह काम करते हैं। बच्चों को किस तरह सुरक्षित रखा जाये-यह एक बड़ा प्रश्न है। घर-घर में जाकर घरवालों की, बच्चों के माता-पिता को, स्कूलों में शिक्षको को, अन्य वयस्कों को इस विषय में जानकारी देना बहुत जरूरी है। जिससे वे बच्चों की सुरक्षा करने को अपना कर्त्तव्य समझें और उसको निभाने का हर सम्भव प्रयास करें करना होगा। उन्हें शरीर के गुप्त प्रशिक्षण देना होगा, जिससे कोई तो वे निर्भीकता से दूसरों को बो लिए बच्चों के साथ मित्रों जैस होगा। उन्हें विश्वास दिलाना होग जरूरत हो हम उनकी मदद उपलब्ध रहेंगे। बच्चे निश्चयात द्वारा आत्म-विश्वास एवं नि विश्वासपात्र को पहचानें व चुनें समस्या की चर्चा भी करें। उन्हें जब चाहें हमारे पास आ सकते को भी बता सकते हैं। दरअसल वातावरण कुछ ऐसा निर्मित है सामने कुछ बोल नहीं पाते। बड़े है-यह बात बच्चों के मन में रहती है। इस वजह से बड़े (यौन-शोषण का) तो भी बच्च पाते। उसका शिकार होते चले एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक ज बच्चों को बचपन में ही नियंत्रि उनका डर न मिटाया जाये तो उ इससे प्रभावित होकर भावनात्म प्रतिक्रियाओं से नष्ट हो सक अनुभूति न होवे कि उनके साथ है। बच्चों का दुरुपयोग करने चेतावनी देना जरूरी है। माता-पिता से बातचीत करने क चाहिए। आजकल माता-पिता क बातें सुनने की फुर्सत नहीं मि बातें सुनना ही नहीं चाहते। स फेरकर, सकारात्मक विचारों क समाधान निकालना होगा और ब सुधारना होगा जो कि सम्भव बच्चों की यह समस्याएँ हैं जो सच्ची। स्वामी दयानन्द जी की वेदों के अध्ययन की आवश सांसारिक एवं पारमार्थिक उन्न उपदेश प्रस्तुत है। स्कूल एव वैदिक शिक्षा और संस्कृत अनिवार्य कर दिया जावे तो आशा की जा सकती है कि धीरे-धीरे सुधार आ जावेगा शान्ति, व्यवहारिक ज्ञान की होगी। विद्यार्थियों में सद्गुणों माता-पिता-आचार्य एवं सम्म कर्त्तव्य है। आध्यात्मिक विचार से उनके जीवन को विक वेद-विरूद्ध आचरण का नि विद्वान् लोग अपने ज्ञानरूपी भावी नागरिक अर्थात् बच्च समस्या रहित करके चमका दे

अशुद्ध गणित से छप रहे वर्तमान में प्रकाशित सारे ही प

-आचार्य दार्शनेय लोकेश, मो. 0120-42771410

आज से 127 वर्ष पूर्व संवत् 1949 में, द्वारका मठ के जगद्गुरु शंकराचार्य श्री ने स्वयं एक मठादेश जारी करके हिन्दुओं को चेताया था। मठादेश में कहा गया था कि निरयन पंचांग धार्मिक रूप से ग्राह्य नहीं है क्योंकि उनसे व्रत, पर्वों के निर्धारण में गम्भीर त्रुटि हो रही है। मैंने आचार्य श्री का वह मूल आदेश पत्र, अब तक प्रकाशित, अपने लगभग सभी वैदिक पंचांगों (श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम्) में प्रकाशित किया हुआ है। आर्षायण (पंचांग प्रकाशन के लिए गठित किया गया पंजीकृत ट्रस्ट) के खाते में 125.00 रूपये भेजकर कोई भी सज्जन महानुभाव इस तिथि पत्रक की प्रति मांग सकते हैं। पंचांग में प्रकाशित ये मठादेश देख सकते हैं और उसकी गणितीय और शास्त्रीय परख सकते हैं।

सन् 1942 में भारत सरकार ने जो कै. रि. कमेटी बिठाई थी उस कमेटी ने जो रिपोर्ट प्रस्तुत की थी उस रिपोर्ट के पेज 260 पर लिखा है, निरयण पंचांगों को जारी रखने वाले पंचांगकार अगर यह समझते हैं कि वे हिन्दु जनता का धार्मिक मार्गदर्शन कर रहे हैं तो वे भ्रम में हैं। वास्तव में ऐसा करके वे सारे समाज को गुमराह कर रहे हैं और इस प्रकार उनको अधर्म की ओर ले जा रहे हैं।

भाटापाड़ा के सुप्रसिद्ध खगोलविद् डॉ. रिहमाल प्रसाद तिवारी ने सतर्क स्पष्ट किया है कि निरयण प्रथा एक कुप्रथा है। निरयण पंचांग पूरी तरह से अवैज्ञानिक और निराधार हैं। वे ऋतुओं का सही संज्ञान नहीं दे रहे हैं। सुप्रसिद्ध ज्योतिर्विद् श्री अवतार कृष्ण कौल एवं श्री भोला दत्त महतोलिया ने तो निरयण पंचांगों के मिथ्यात्व के स्वीकरण में अपने पंचागों को प्रकाशित करते रहना भी बन्द कर दिया। मेरा सौभाग्य है कि इन तीनों वयोवृद्ध ज्योतिर्विदों का श्री मोहन कृति आर्ष पत्रकम् को अपना समर्थन प्राप्त है।

कृषि प्रधान आर्यावर्त में वेदों का एक बहुत बड़ा विज्ञान है, ऋतु दर्शन। इसी अर्थ से संवत्सर को प्रजापति कहा गया है। प्रजापतिवै संवत्सरः संवत्सर हमें ऋतु क्रम देने के अर्थ से ही प्रजापति है। ऋतुएं हमें घड़ी में लगे सचेतन समय (अलार्म) की तरह कृषि साधने की चेतना देती है। अन्नाद भवन्ति भूतानि अन्न हमें जीवन और आयु देता है। मुझे अति प्रसन्नता है कि कुछ बुद्धिजीवियों की चेतना अब इधर आने लगी है कि यदि होली व दीपावली नवशस्येष्टि के त्योहार हैं जो आज दीपावली एवं होली पर नई फसल का उत्पादन क्यों नहीं दिख रहा है? वस्तुतः उनको यह बात पता नहीं है कि आज ऋतुएं फसलों का नियमन नहीं कर रही है। आज तो मनुष्य और उनके ये भ्रान्त निरयण पंचांग ऋतुओं का नियमन कर रहे हैं। इसी से दीपावली दीप अवली की तरह तो है पर नवशस्येष्टि का त्योहार नहीं रह गया है। स्तरण रहे कि अवली का एक अर्थ पहले-पहले खेत में काटा जाने वाला अन्न भी होता है। अब आप समझ सकते हैं कि मनमर्जी की ऋतुएं भला फसल का नियमन कैसे करेंगी?

मार्तण्ड पंचांग के विद्वान् सम्पादक श्री प्रियव्रत शर्मा ने इस बात को स्वीकार किया है कि हमारे वर्तमान पंचांगों की मास गणना ऋतुओं से हटती जा रही है। काशी विश्वविद्यालय के पूर्व प्रोफेसर केदारदत्त जोशी की पुस्तक मुहूर्त्तमार्तण्ड की भूमिका से लिखे गये उनके वचन देखें- ''परन्तु खगोल ज्ञानशून्य आज के अनभिज्ञ पंचांगकार सारणियों पर अशुद्ध पंचांग निकाल कर अपनी अज्ञानता के अहं तो तुष्ट करने पर लगे हैं। यथा मकर राशि पर सूर्य 21/22 दिसम्बर को ही वेध से आता स्पष्ट प्रतीत होने पर भी 14/15 जनवरी को मकर संक्रान्ति पंचांगों में करना कहाँ तक समीचीन है?..... जब तक पंचांग शुद्धग्रह गणित से नहीं निकालेंगे तब तक फलित शास्त्र विश्वसनीय नहीं हो पायेगा। आज प्रायः सभी भारतीय पंचांग ग्रह गणित से अशुद्ध हैं। परम्परावादी सुधार भी नहीं करना चाहते यदि अन्य सुधि जन इसका प्रयास करते भी हैं तो उन्हें इनके संगठित विरोध का सामना करना पड़ता है और उनका स्वर इनके स्वर के सामने दब जाता है...।'' आर्य-पर्व पद्धति के विद्वान् लेखक स्व. पं. भवानी प्रसाद जी ने मकर संक्रान्ति नाम से इस त्यौहार पर लिखा है, ''उत्तरायण'' के दिवस मकर संक्रान्ति को भी अधिक महत्व दिया जाता है और स्मरणातीत चिरकाल से उस पर पर्व मनाया जाता है। उन्होंने लिखा है, ''सूर्य की मकर राशि के संक्रान्ति से उत्तरायण और कर्म संक्रान्ति से दक्षिणायन प्रारम्भ होता है।'' सोचने की बात यह है कि अगर एक भी संक्रान्ति किसी भी महीने के 21 या 22 दिनांक में होगी तो बाकी बचे सभी 11 महिनो संक्रान्ति क्या कभी 13ए 14 या 14वे सकती है? नहीं, कभी नहीं, कभी न भी नहीं। मकर संक्रान्ति के बाद शुक्ल शुक्ल होता है। अब जब सही तौर प ही नहीं लिखा जायेगा तो क्या ऐसे ले को सही ले सकेंगे और यदि माघ शु तो? क्या चैत्र शुक्ल या अश्विन शुक भी चान्द्र मास सही ले सकेंगे? नहीं और कभी भी नहीं। इसलिए जब वाल चल रहा होता है तो आपको उसकी हो पाती है। पितृपक्ष ही क्या दशह होली, गुरु पूर्णिमा आदि सब त्यौहार और अमान्य रह जाते हैं, जिनक तिथियों की सूचना आपको होती ही अमावस्या मनानी है आप दीपावली ना पितरों के सगे ओर ना मा लक्ष्म प्रकार और भी।

वर्तमान में छप रहे, सारे के सारे हैं क्योंकि उनकी सौर मास गणन क्रान्तिसिद्ध संक्रान्तियों पर आधारित वैदिक पंचांग की पहली आवश्यक नक्षत्रों का परिमाप और उनकी सं लिए जा रहे हैं, ये और एक अलग पंचांगों की अशुद्धि के कारण हम और त्यौहार लगभग 24 दिन की ग मना रहे हैं। ये गलती प्रति 72 ऋतु में मनेगी। अस्तु, मैं चेतावनी देता हूँ समय पर नहीं सुधरे तो हम सुधरने त रह जायेंगे। कुछ सोचेंगे आप? क हमारा परमपावनी, सनातन प्रवाही, से जरा भी लगाव है तो ये सत्य स्वीकार करना पड़ेगा। आज नहीं, के अभी।

लाल बहादुर शास्त्री जी का सादगी भरा

राष्ट्रमंडलीय प्रधानमंत्रियों के सम्मेलन में भाग लेने के लिए प्रधानमन्त्री लाल बहादुर शास्त्री को लंदन जाना था। परन्तु उनके पास दो ही कोट थे। उनमें से एक में बड़ा छेद हो गया था। शास्त्री जी के निजी सचिव वेंकटरमण ने उनसे नया कोटसिला लेने का आग्रह किया, परन्तु शास्त्री जी ने यह कहकर इनकार कर दिया कि अभी तो इस पुराने कोट को पलटवा लो। यदि मरम्मत के बाद ठीक नहीं लगा तो दूसरा सिलवा लेना। जब कोट दरजी के यहाँ से लौटकर आया तो उसमें मरम्मत नहीं पता चल रहा था। यह देख शास्त्री जी बोले- ''जब कोट की नई सिलाई का पता हमें नहीं चल पा रहा है तो सम्मेलन में भाग लेने वाले भला इसे क्या पहचानेंगे?'' वे उसी कोट को पहनकर लंदन के सम्मेलन में भाग लेने गए। ऐसी थी उनकी सादगी कु कृपणता समझ सकते हैं, पर सत्य यही है कि इस सादगी से ही अवव्यय को रोका जा उसी के माध्यम से देश के विकास का पथ निर्धारित किया जा सकता है।

(पृष्ठ 1 का शेष)

जायेगा। तब व्यर्थ की बातें पद, प्रतिष्ठा अहंकार तथा बाहर की भागदौड़ स्वत: रूक जायेगी। जीवन की दशा और दिशा दोनों ही बदल जायेंगे। यह पर्व चिन्तन-मनन कुछ करने, देने, लेने, छोड़ने, संभलने व सुधारने का सन्देश तथा प्रेरणा दे रहा है। आज धर्म, भक्ति तथा परमात्मा के नाम पर ढ़ोग-पाखण्ड, गुरुडम, आडम्बर, प्रदर्शन, पूजा-पाठ गुरुवाद आदि तेजी से बढ़ रहे हैं। व्यक्तिपूजा और जड़पूजा तेजी से प्रचारित व प्रसारित हो रही है। बोधोत्सव कह रहा है-जड़ पूजा से चेतन पूजा की ओर चलो। शरीर के साथ-साथ चेतन आत्मा का भी चिन्तन करो। भौतिकता से आध्यात्मिकता की ओर बढ़ो। भोग से योग की प्रवृति बनाओ। प्रवृति से परमात्मा की ओर बढ़ो। भाव से आनन्द की ओर चलो। यही जीवन जगत का सारतत्व है। इस महापर्व का मौलिक चिन्तन, दृष्टि एवं संदेश है-हम जीवन जगत, आत्मा, परमात्मा, भक्ति धर्म, धर्म ग्रन्थों, महापुरुषों आदि का सत्यबोध प्राप्त कर जीवन को आत्मा-परमात्मा से जोड़े। तभी बोधोत्सव मनाने की उपयोगिता सार्थकता, व्यवहारिकता एवं प्रासंगिकता है। सभी मनाने की उपयोगिता सार्थकता, व्यावहारिकता एवं प्रासंगिकता है। सभी के जीवनों में बोधोत्सव का सन्देश घटित हो। ऐसी प्रभु से प्रार्थना और कामना है।

-शालीमार बाग, मो. 9810305288

ऋषि भक्ति भजन

ऋषि कौम का रहनुमा बनके आया
दु:खी बेवसों का सखा बनके आया।

अन्धेरों ने काबू किये थे उजाले
लगाए हुए थे दिमागों पे ताले
खुली रोशनी क दिया बनके आय।।1।।

गुलामी के दिन थे गुलामी की रातें
गुलामी के धन्धे गुलामी की बातें।
गुलामी पे कहरे खुदा बनके आया।।2।।

निराशा के बादल हवा बन उड़ाये
उम्मीदों के फिर से चमन मुस्कुराए
सुहाने सफर की दवा बनके आया।।3।।

जिन्दा तो थे जिन्दगानी नहीं थी।
नाम तो था बाकी निशानी नहीं थी
सफल जिन्दगी की फिजा बनके आया।।4।।

शोक समाचार: विनम्र श्रद्धांजलि

1. आर्य नेता श्री राव हरिचंद्र आर्य (नागपुर) का निधन।
2. आचार्य श्री सत्यानन्द वेद वागीश (जोधपुर) का निधन।
3. श्री फूल सिंह आर्य (आर्य समाज मंगोलपुरी) का निधन।
4. श्री गजानन्द आर्य (अजमेर) का निधन।
5. श्री रतिराम शर्मा (सिलीगुड़ी) का निधन।

(पृष्ठ 2 का शेष)

उपासना तथा ज्ञान का विवेचन है। वे इनमें विज्ञान को सर्वप्रमुख मानते हैं। दयानन्द के अनुसार विज्ञान आज के 'साइन्स' से कहीं अधिक ख्याति वाला है। उनका कथन है कि परमेश्वर से आरम्भ कर तृण पर्यन्त पदार्थों का साक्षात् बोध ही सच्चा विज्ञान है। इनमें भी वे ईश्वर के अनुभव को मुख्य मानते हैं। उनकी मान्यता है कि समस्त वेदों में ईश्वर को ही सर्व पदार्थ समूह में प्रधानता दी गइ है।

जब ऋषि दयानन्द ने वेदों में विज्ञान की स्थिति बताई तो पाश्चात्य विद्वानों (प्रो. मैक्समूलर तथा अन्य) तथा कतिपय भारतीय विद्वानों (यथा-पं. बलदेव उपाध्याय लिखित सायण कृत वेदभाष्य भूमिकाओं के सम्पादित संस्करण की भूमिका) ने इस मान्यता का उपहास किया। उनका कहना था कि वेदों में रेल, तार तथा स्टील ऐंजिन आदि की अब स्थिति बताना हास्यास्पद है। सच्चाई यह है कि वे ऋषि दयानन्द की एतद् विषयक मूल भावना को ही नहीं समझें। यों प्रत्यक्ष देखें तो क्या अथर्ववेद में आयुर्वेद, औषधि विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, मनोविज्ञान, सैन्य विधा, शासन व्यवस्था, कामशास्त्र आदि के सैकड़ों विषय वर्णित नहीं हैं? सायण आदि भाष्यकारों की अपव्याख्याओं के कारण तथा अथर्ववेदीय कौशिक सूत्र का आधार लेने के कारण अथर्ववेद के समीक्षकों ने इस विज्ञान प्रधान वेद को जादू, टोना, अभिचार, तन्त्र, मन्त्र आदि का स्रोत बताया, किन्तु यदि वेद की व्याख्या को उन्होंने दयानन्द की पद्धति से किया होता तो वे सत्यार्थ के अधिक निकट होते।

सत्यार्थ प्रकाश के सप्तम समु
ने वेदविषयक विवेचन को निम्न
है-'वेद का नित्यत्व और ईश्वर क
मीमांसा में मान्य अपौरूषेयत्व त
उसे पौरूषेय (परम पुरुष परमात्
बताने में कोई विरोध नहीं मानते।
को अपौरूषेय बताना यदि निगेटि
नैयायिकों का परम पुरुष परमा
बताना पॉजिटिव कथन है। दोनों
ही है। इस समुल्लास में स्वामी ज
अन्य विषय लिये हैं-वेदों का च
आत्माओं में आविर्भाव, वेदोल्लिखि
मन्त्र द्रष्टा होना न कि वेदों का रच
भाग और ब्राह्मण का पार्थक्य, श
की व्याख्या होना न कि स्वयं वेद ह

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका तो
विवेचन को ही समर्पित है। इसक
प्रकरण वेदविषयक विभिन्न प्रश्
तथा तदुत्पन्न शंकाओं एवं प्रश्न
करते हैं। इनमें कुछ अध्याय
सर्वविद्यामयत्व को स्थापित करते
सृष्टि विद्या, उपासना विषय, मुक्ति
वेदों में आध्यात्मविद्या के सूचक
विद्या, तार विद्या, वैद्यक विवाहादि
राजा-प्रजा धर्म, वर्णाश्रम विषय
लौकिक पक्ष को उजागर करते हैं।

निश्चय ही कलियुग में ऋषि
गौरव को प्रतिष्ठित करने वाले प्रथ

- 3/5 शंकर कॉलोन

तुलसी के बारे में कुछ आवश्यक जा

(1) आयुर्वेद के अनुसार तुलसी हल्की उष्ण, तीक्ष्ण, कटु, रूक्ष, पाचन शक्ति को बढ़ाने वाली, कृमी और दुर्गन्धनाशक, दूषित कफ तथा वायु को शान्त करने वाली, पसली के दर्द को मिटाने वाली, हृदय के लिए हितकारी, मूत्रकच्छ के कष्ट को मिटाने वाली, विषविकार, कोढ़, अनेक चर्म रोग, हिचकी, उल्टी, खाँसी, श्वास, नेत्र रोगों आदि में लाभकारी है।

(2) तुलसी की कई जातियाँ है, परन्तु साधारणत: औषधि के लिए सर्वत्र सदा सुलभ पवित्र तुलसी (ओसिमस सेंक्टम) का प्रयोग किया जाता है जो दो प्रकार की होती है-एक हरी पत्तियों वाली (श्वेताभ शाखाओं वाली) श्वेत तुलसी और दूसरी कृष्ण रंग की पत्तियों वाली (नीलाभ-कुछ बैंगनी रंग लिए पत्तियाँ और शाखाओं वाली) श्यामा (काली) तुलसी। गुण धर्म की दृष्टि से दोनों प्राय: समान होते हुए भी काली तुलसी को श्रेष्ठा माना गया है। काली तुलसी में कफ निस्सारक तथा ज्वर नाशक गुण श्वेत तुलसी से अधिक माना जाता है।

(3) तुलसी के पौधे में प्रबल विद्युत शक्ति होती है जो उसके चारों तरफ दो सौ गज तक

प्रवाहित होती रहती
लहलहाता तुलसी क
उस पर आकाश क
गिरती, मच्छर तथा
पनपते और बीमारियाँ

(4) तुलसी क
जोड़कर या मन में
सम्मान और श्रद्धा र
आरोग्य और रोग नि
जरूरत हो उतनी ही, तोड़नी चाहि
तोड़ते समय स्मरण रखना चाहिए
आसपास के पत्तिया तोड़ने से पौध
अत: मंजरी के पास की पत्तिय
उचित है। पूर्णिमा, अमावस्या,
कार्तिक, द्वादशी, रविवार, संध्या
में बारह बजे के आसपास तुल
तोड़नी वर्जित है। तेल की मालि
नहाए, स्त्रियों के मासिक धर्म क
किसी प्रकार की अन्य अशुद्धता
के पौधे का स्पर्श या पत्तियों को
शीघ्र सूख जाता है। यदि पत्तों में
लगे तो कंडे (छाणे) की राख ऊप
उत्तम फल मिलता है।

- डॉ.

माह जनवरी 2020 के आर्थिक सहयोगी

1.	श्रीमती आदर्श सहगल जी, उपप्रधान-शुद्धि सभा दिल्ली	2100/-सदस्यता शुल्क
2.	श्रीमती वीना बजाज जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	2100/-सदस्यता शुल्क
3.	श्रीमती नीलम खुराना जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	1200/-वार्षिक सहायता
4.	श्रीमती कृष्णा दुबे जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	1200/- वार्षिक सहायता
5.	ब्रिगेडियर के.पी. गुप्ता जी, सैक्टर-15 ए, फरीदाबाद	1000/- मासिक
6.	आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली	1000/-मासिक
7.	आर्य समाज साकेत, नई दिल्ली	800/- मासिक
8.	श्री शिव कुमार मदान जी ट्रस्टी, जनकपुरी, नई दिल्ली	200/- मासिक
9.	श्रीमती सुशीला चावला जी, पीतमपुरा, दिल्ली	100/-मासिक

श्रीमती सुदेश तलवार जी द्वारा एकत्रित दान

1.	श्रीमती संतोष चावला जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	1200/- वार्षिक
2.	श्रीमती आशा ककड़ जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	1200/- वार्षिक
3.	श्रीमती मृदुला रस्तोगी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	1200/- वार्षिक
4.	श्रीमती वासंती चौधरी जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द नगर	500/-मासिक
5.	श्रीमती सुदेश तलवार जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द नगर	100/-मासिक
6.	श्रीमती कैलाश कपूर जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द नगर	100/- मासिक
7.	श्रीमती इन्दू बिज जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	50/-मासिक
8.	श्रीमती सन्तोष हिंगल जी, आर्य महिला आश्रम, न्यू राजेन्द्र नगर	50/-मासिक

श्रीमती संतोष वधवा जी, द्वारा एकत्रित दान

1.	श्री मनोहर लाल गुलाटी जी, आर्य समाज नारायणा विहार, नई दिल्ली	500/-
2.	श्रीमती सच्चिदानन्द आर्या जी, नारायणा विहार, नई दिल्ली	500/-
3.	श्रीमती विमला चौपड़ा जी, ओल्ड राजेन्द्र नगर, नई दिल्ली	500/-
4.	श्री राकेश मल्होत्रा जी, आर्य समाज, नारायणा विहार, नई दिल्ली	200/-

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल के तत्वावधान में शनिवार दिनांक 4 जनवरी 2020 को गौतम नगर गुरुकुल में स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रवक्ता आचार्य विद्या प्रसाद मिश्र ने स्वामी श्रद्धानन्द के 93वें बलिदान दिवस पर उन्हें नमन करते हुए कहा कि भारत सरकार भी स्वामी श्रद्धानन्द के पदचिन्हों पर ही चल रही है। नागरिकता संशोधन कानून (सीएए) का हवाला देते हुए मिश्र ने आगे कहा कि जो लोग तुष्टीकरण की राजनीति करते हैं, उन्हें यह अवश्य समझना चाहिए कि जन्म से, वंश से या पंजीकरण से देश का नागरिक होना बहुत जरूरी है। यह आयोजन आचार्य बाल कृष्ण के गुरु स्वामी प्रणवानन्द के सान्निध्य में किया गया था। इस मौके पर राकेश भटनागर, अनिल आर्य, रवि देव गुप्ता, चतर सिंह नागर, अनुराग मिश्र, अतुल अरोड़ा सहित सैकड़ों लोग मौजूद रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता, मंडल के प्रधान श्री ओमप्रकाश यजुर्वेदी ने की। इस अवसर पर मंडल के पूर्व महामन्त्री श्री चतर सिंह नागर जी का मंडल के वर्तमान अधिकारियों ने सम्मान किया।

राष्ट्र गीत

वतन अभ्युदय वन्धुर पंथा
युग युग धावित भात्री
हे चिर सारथी।
तवरथ चक्रे मुखरित
पथ दिश रात्रि
दारूण, विप्लव भाजे
तव शंख ध्वनि बाजे
संकट सुखद जाता।
जन गण पथ परिचायक जय हे
भारत भाग्य विधाता।
जय हे जय हे जय हे जय हे।
घोर तिमिर घन निवास निशीथ।
पीडित मूर्छित दिशे।
जगत दिन तव
अविचलित मंगल।
नत नत नये अनिमेष
दु:स्वप्ने आतंके।
रक्षा करिजे अंके।
स्नेहमयि तुमि माता।
जन गण दुखत्रयक जय हे।
भारत भाग्य विधाता।
जय हे जय हे जय हे जय हे।
जय हे जय हे जय हे जय हे
जय हे जय हे जय हे जय हे।

-गुरू शंकर विद्यार्थी।

संकलन कर्ता अशोक जौहरी।

- नत मस्तक सब आर्य जन, करते
अजर अमर है विश्व में दयान
दयानन्द का नाम, महर्षि पदवी पा
जन-गण-गण को राह दिखाई गो
छोड़ते राजी-राजी अगर न देते
आर्य समाजी।

-श्री का

- जो न हटा मुख फेर, बढ़ा जीव
जिसका साहस हेर, विध्न, भय,
सबल सत्य की हार, अनृत की
ऐसे प्रबल विचार, सहित विचर
उस दयानन्द ऋषिराज का प्रकृति
पढ़े। प्रभु शंकर ''आर्य समाज क
गौरव बढ़े।''

-श्री नाथूराम

- लोक हित चिन्तन में गृह सुख त्याग
का अनन्य अनुरागी ऊर्ध्वरेता
अद्वितीय अभिमानी आर्य सभ्यत
क दानी धर्म ग्रन्थ का प्रणेता
समान कोटि-कोटि शिव मण्डल
विरोधियों के वृन्द का विजेता थ
भाग्य का भविष्य रूप दयानन्द श
हिन्दुओं में एक नेता था।

- मौलाना हैदर अली बड़े आलिम
वह श्री पं. भोजदत्त जी आर्य मुसा
दो महीने रहे उनसे सत्यार्थ
चौदहवां समुल्लास कुरान से मिल
दो महीने के बाद अपने बगल में
तेज छुरा निकाल कर पं. जी की
चरणों पर रख कर कहा-मैं यह
जी को मारने के लिए लाया था,
मैं हकीकत हक की तलाश में
हकीकत इनके साथ न देखता तो
को मार देता। इनके मुँह से सत्यार्थ
कर मैं हकीकत का कायल हो
यह छुरा आपके चरणों में रखता ह
मेरी मां है।

ऋषि बोधोत्सव का निमन्त्रण एवं आर्थिक सहायता क

प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष बोधोत्सव का आयोजन 20, 21, 22 फरवरी 2020 (वी
शनिवार) को महर्षि दयानन्द जन्म स्थली टंकारा में आयोजित किया जा रहा है।
कि आप इस कार्यक्रम में परिवार एवं मित्रों सहित अधिक से अधिक संख्या में पधारने

सामवेद पारायण यज्ञ: 15 फरवरी से 21 फरवरी 2020 तक

ब्रह्मा: आचार्य रामदेव जी

भक्ति संगीत: श्री सत्यपाल पथिक (अमृतसर) डॉ सुकृति माथुर व श्री अविरल माथु

सम्पूर्ण कार्यक्रम के अध्यक्ष:

पद्मश्री डॉ. पूनम सूरी

(प्रधान, डी.ए.वी.कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति)

बोधोत्सव

दिनांक 21.02.2020

ऋषि स्मृति समारोह

मुख्य अतिथि: **महामहिम आचार्य देवव्रत जी**, राज्यपाल गुजरात सरकार

विशिष्ट अतिथि: **पद्मभूषण महाशय धर्मपाल**, एम.डी.एच. (प्रतिष्ठित उद्योगपति)

श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा

अध्यक्षता: **श्री सुरेश चन्द्र आर्य**, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

निवेदक **शिवराजवंती आर्या**, उपप्रधाना रामनाथ

R.N.I.No. 43084/76
Date of Publication 01-02-2020

Delhi Postal R.No. G-3/DL (N) 06
Posting Date: 2-3 Every Month

सेवा में,

शुद्धि समाच
फरवरी-

धर्मवीर बाल हकीकत बलिदान दिवस बसंत पचंमी पर

भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में स्पष्ट कह दिया है कि जब-जब धरती पर धर्म की हानि होती है और अधर्म बढ़ता है, तब-तब मैं अवतार धारण करता हूँ। देश प्रेम हो अथवा धर्म प्रेम यदि वह सच्चा है तो वह किसी बलिदान से कम नहीं होता। एक व्यक्ति के लिए देश-धर्म उसके माता-पिता एवं गुरु से बढ़कर होता है। दूसरी बात कि जिस धर्म में करूणा, दया और परोपकार की भावना रहती है, वह सर्वमान्य हो जाता है। जब किसी देश में विदेशी आक्रांता प्रवेश करती हैं तो उसकी मानसिकता दूषित होती है। वे विजयी देश में लूट-पाट, मार-धाड़ मचाकर जनता को भयभीत करने का प्रयास करते हैं। लोगों के धर्म को बलात् बदलने का प्रयास करते हुए जनसामान्य की सहानुभूति खो देते हैं। यही कारण होता है कि लोग उन्हें कभी भी स्वीकार नहीं करते। ऐसे में कोई देवता वीरपुरुष अथवा बलिदानी के रूप में अवतरित होता है।

भारत ने कभी किसी देश पर आक्रमण नहीं किया, किसी के धर्म अथवा संस्कृति को परिवर्तन करने का कार्य नहीं किया है। भारत सदा सहिष्णु और धर्मनिरपेक्ष बना रहा है। लेकिन हमारे देश में जितने भी आक्रमणकारी आए सब ने हमारे धर्म और हमारी संस्कृति को बलात बदलने का प्रयास किया। काश वे 'मन जीते जग जीत' के मर्म की विमल व्याख्या को जान पाते। इस भावना को न मंगोलो ने समझा न अंगेजों ने ही। इन विदेशी आक्रान्ताओं ने हमारे हिंदू धर्म को बलात अपने धर्म में परिवर्तित करने का हठ ठाने रखा। ऐसे में आवश्यक था कि उनके अत्याचारों के सामने पर्वत बनकर खड़े होने वाले वीरों का अवतरण होता और वे अपना बलिदान देकर शेष जाति का मार्गदर्शन करते। समय-समय पर माँ भारती ने ऐसे वीर पुरुषों को उत्पन्न किया, राणाप्रताप, वीर शिवाजी, गुरु गोविदसिंह, लक्ष्माणदास बंदा बैरागी। धर्मनिष्ठ ललनाओं की भी कमी नहीं रही है, रणचण्डी, रानी लक्ष्मीबाई इत्यादि कितने ही नाम लिए जा सकते हैं। ठीक इसी प्रकार धर्म के नाम पर शहीद हुए किशोर बालक वीर हकीकत को कौन देश-वासी नहीं जानता, जिसने अपने पवित्र धर्म और मृत्यु दोनों में से मृत्यु का वरण किया था।

धर्मवीर हकीकत राय सियालकोट (अब पाकिस्तान) में पिताश्री भागमल और माताश्री गौरां के घर में सन 1724 में अवतरित हुए। यह नगर तत्कालीन पंजाब के उत्तर-पूर्व की ओर बसा था, जिसे राजा शालीवाहन अथवा साल्व ने बसाया था। यह दादा नंदलाल पुरी का क्षत्रिय परिवार था। समय आने पर पिता जी ने इसे स्यालकोट की राजभाषा सीखने और विद्या-ग्रहण के लिए मकतब में भेजा था। बालक बड़ा होनहार, वीर, धीर-गंभीर, मृदु-भाषी और ओजस्वी चिंतन वाला था। तत्कालीन समाज में शादी तरूणावस्था में कर दी जाती थी। वीर बालक की

वीर हकीकत राय

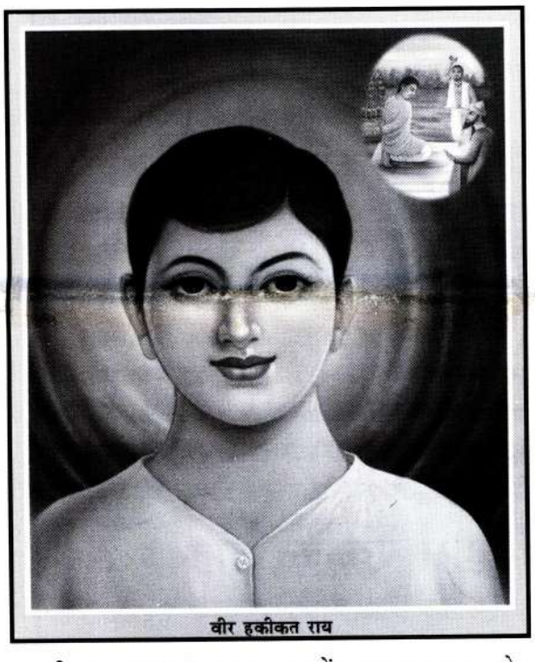

शादी का प्रस्ताव बटालानगर में रखा गया। इस हेतु दादा नंदलाल जी, पिता श्री भागमत और एक नाई बटाला नगर में पधारे थे, अतः श्रीयुत किशनचंद उप्पल क्षत्रिय की सुन्दर कन्या लक्ष्मीदेवी से रिश्ता तय हो गया था। अध्ययनरत रहते कई वर्ष बीत चुके थे कि एक दिवस मकतब में उत्पात मच गया। मुस्लिम बच्चों के साथ हकीकत की धर्म-चर्च हो रही थी। हम-उम्र बच्चे आपस में उलझ पड़े। मामूली झगड़ा था, लेकिन मुस्लिम बच्चों ने माता दुर्गा के नाम पर अपशब्द कह दिए। इस पर हकीकतराय ने कहा कि यदि ऐसे ही अपमान भरे शब्द वह मोहम्मद साहब की बेटी फातिमा की शान में प्रयोग किए जाएँ, तो आपको कितना कष्ट होगा। यह योग्य बात भी बच्चों और मौलवी जी से सहन नहीं की गई। इसे लेकर झगड़ा बढ़ा दिया गया। चेतन मन साहसी किशोर भी डटा रहा। इधर मौलवी, मुल्ला और काजी सब एक हो गए। यह मामला स्याल के हाकिम अमीरबेग तक जा पहुँचा, तो उसने इसका चालान बनाकर लाहौर के सूबेदार को भिजवा दिया। बात मामूली थी, तूल दे दी गई। काजी ने फैसला सुना दिया।

ऐ किशोर! मुस्लिम बनो,
छोड़ो हिन्दू धर्म।
वरणा मौत कबूल हो,
नहीं दूसरा मर्म॥

फैसला सुनाते ही पूरे हिन्दुस्तान में रोष की लहर फैल गई। हिन्दू जाति त्राहि-त्राहि कर उठी। एक बच्चे बेकसूर बच्चे को इतनी बड़ी सजा! मुस्लिम हाकिम बार-बार वीर बालक को बहकाते रहे। उसमें भय उत्पन्न करने की कोशिश में लगे रहे। बालक था कि धर्म-ईमान का पक्का निकला। उसने स्पष्ट कह दिया कि वह मृत्यु से कदाचित डरता नहीं। जीवन-मरण किसी के हाथ में नहीं होता, न किसी
होती है, अतः वह हिन्दू धर्म का त
हाथों में पवित्र गीता का ग्रंथ और मन
हिलोरे लेने लगा।

''नैनं छिन्दंति शस्त्राणि नैनं द
न चैनं क्लेदयंत्यापो न शोषय

शरीर तो होता ही नाशवान है। इ
है? यह तो पुनः प्राप्त हो जाएगा। आ
न मरे, न कटे न जले और न सूखे। ये
आत्मा को कोई हानि नहीं पहुँचा स
अपना धर्म नहीं हारूँगा। माता-पि
सास-ससुर इत्यादि के मन में कभी
जागृत होती तो कभी मोह-ममता औ
की राहें रोक लेता। किशोर बालक
हुआ हाथों में पवित्र गीता पकड़े अ
देकर ढाढ़स बांधता रहा। उसका
इसलिए वह मृत्यु को गले लगाने
तैयार रहा। कोई हिचक नहीं, कोई
निश्चित होकर अपनी आत्मा के लिए
प्रतीक्षा में खड़ा हकीकत मुस्कुरा
हाकिमों! तुम मुझे नहीं मार सकते
अमर है इस नश्वर शरीर से कैसा ल
देश-धर्म हित के लिए सीस कटाना
होगा। आओ! जल्लाद आओ!

मात्र सत्रह वर्ष की अवस्था थी
इकतालिस के माद्य मास की वसंत
दिवस था। पापी, मक्कार और अन्
बहादुर (जकरिया खान) ने अंततः
का हुकुम सुना दिया। एक युवा किश
अत्याचारों की बली चढ़ा दी गई। सस
होने वाले दामाद के श्री चरणों
माता-पिता भाई-बाँधवों ने सीने पर
लेकिन दुर्जन आतताइयों के प्रति नत
इधर बटाला नगर में होने वाले पत्नी
होने वाले धर्मवीर साहसी पति के
समाचार मिलते ही, तत्कालीन रीति-
तैयार करते हुए सती हो गई। वीर
समाधि लाहौर के पूर्वी छोर में बनी
समाधि स्थल पर प्रतिवर्ष वसंत पंच
लगता है। बटाला नगर में एक विस्
लक्ष्मीदेवी के साथ ही धर्मवीर बालक
भी सुन्दर एवम् आकर्षक समाधि बनी
वसंत पंचमी के दिन यहाँ पर भारी मे
पर विद्वानों द्वारा देश धर्म पर मिट
गाथाओं द्वारा युवाओं का आह्वान
देश-धर्म के नाम पर शहीद होने वाले
जी ने वीर हकीकत के दादा नन्दलाल
उन्हें उनके पौत्र के शहीद हो जाने पर

मुद्रक व प्रकाशक-रामनाथ सहगल द्वारा मयंक प्रिन्टर्स-2199/63, नाईवाला करोल बाग, नई दिल्ली-110005, से मुद्रि
भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा, 6949, बिड़ला लाइन दिल्ली-7, दूरभाष: 9711258445, 9718550459 से प्रकाशित। सम्पादक: डॉ. भारद्वाज